# अमरत्व की ओर ले जाने वाला महापर्व शिवरात्रि

**अंधेरे में मनुष्य सही दिशा में नहीं चल सकता। अगर चलने की कोशिश भी करेगा तो भटकेगा और ठोकर भी अवश्य खायेगा। तो रात्रि का सम्बन्ध यहाँ रोज़ होने वाली रात्रि से नहीं है परंतु अज्ञान की रात्रि से है। हम कहते हैं- हे प्रभु! आओ हमें सत्य राह दिखाओ, सद्बुद्धि दो जिससे हम जीवन में ठोकरें खाने से बच जायें। यही तो हम कामना करते हैं परमात्मा से। अब वो आकर क्या करता है जो हमें जाने-अनजाने में चाहे शास्त्रों से, चाहे यहाँ पंडितों से जो सुना है, भाव भले सही हो लेकिन उससे मिल भी नहीं सके और अंधेरे से मुक्त भी नहीं हो सके और न ही कुछ प्राप्ति हुई। तो सही अर्थों में जाने इस महान पर्व के पीछे छिपे आध्यात्मिक रहस्य को।**

वरिष्ठ राजयोगी ब्र.कु. सूरज भाई

भगवान को याद करना, उसको बुलाना, उसकी ओर निहारना, ये बहुत ही सहज रूप से चला आता है। जब किसी मनुष्य पर कोई मुसीबत आती है, जब उसे कोई सहारा नज़र नहीं आता, जब उसके जीवन में दुःख बहुत बढ़ जाते हैं, निराशाओं की काली रातें उसको कुछ भी मार्ग देखने नहीं देती, जब सफलता उससे दूर जाती है, जब परिवारों में अनहोनी घटनाएं घटने लगती हैं तब लोग उसे प्यासी नज़रों से निहारते हैं, याद करते हैं, बुलाते हैं, हे भगवान! आओ मदद करो। देखो इसमें बुलाने में कितना अपनापन है। मदद भी उससे ही मांगी जाती है जो मदद कर सकता हो।

भारत में श्रीमद्भगवद् गीता में भी और रामचरित्र मानस में भी ये लिख दिया है कि जब-जब धर्म की ग्लानि होती है, तब-तब भगवान आते हैं और अधर्म का विनाश करते हैं, दुःखों की समाप्ति करते हैं, असुरों का संहार करते हैं। भिन्न-भिन्न बातें हैं। धर्म की पुनर्स्थापना करते हैं, भक्तों की, पुनः आत्माओं की, अच्छे लोगों की रक्षा करते हैं। तो वो एक मान्यता चली आ रही है। लोगों को ये पूर्ण विश्वास रहता है कि वो आयेगा ज़रूर। वो आता है, वो मदद अवश्य करता है।

दूसरी बात आप देख लीजिए भारत में हमारे यहाँ दो-तीन बातें प्रसिद्ध रूप से प्रचलित हैं, गायन है उनका, हे प्रभु! मुझे अंधकार से प्रकाश की ओर ले चलो। मुझे मृत्यु से अमरत्व की ओर ले चलो। मुझे असत्य से सत्य की ओर ले चलो। ये लोग शास्त्रों अनुसार भक्ति में गायन करते रहते हैं। किसी भी विशेष कार्य से पहले ये मंत्र है कि "तमसो मा ज्योतिर्गमय, असतो मा सद्गमय"। तो कैसा अंधकार है? क्या है ये अंधेरा?

तो देखिए लोग शास्त्र पढ़ने से पहले भी कहते हैं कि हे प्रभु! मुझे अंधकार से प्रकाश की ओर ले चलो। शास्त्र पढ़ने के बाद, भक्ति करने के बाद पुनः यही गायन करते हैं, इसका अर्थ है कि अभी प्रकाश में गये नहीं हैं। अंधकार ही है, अंधेरा हो गया है हमें प्रकाश जलाना है, लाइट जलानी है, अपने घर को रोशन करना है, ये तो कॉमन बातें हैं। लेकिन एक है मनुष्य के अन्दर अज्ञान का अंधकार, और दूसरा है विषय-विकारों का घोर अंधेरा। अज्ञान, कैसा अज्ञान? मनुष्य ये नहीं जानता कि मैं कौन हूँ, मेरी शक्तियाँ क्या है, मेरे मूल संस्कार क्या हैं, मेरी प्युरिटी क्या है, मैं सृष्टि के आदि में किस स्वरूप में थी, भगवान कौन है, उससे मेरा क्या नाता है, मुक्ति और जीवन मुक्ति क्या है, राजयोग का पथ क्या है, भगवान के मिलने का मार्ग कौन सा है और उससे मिल करके क्या मिलता है। क्यों मिले हम उसे, क्यों हम उसे याद कर रहे हैं, सृष्टि का आदि-मध्य-अन्त क्या है, किसने ये संसार रचा है, क्यों रचा है, कब रचा था, उसके पीछे रचने वाले का उद्देश्य क्या था, ये माया है, मुक्त अवस्था किसे कहते हैं, स्वर्ग किसे कहते हैं, इसके बारे में मनुष्य को ज्ञान नहीं है। इसको कहते हैं सम्पूर्ण अज्ञान।

इस अज्ञान के कारण ही पाप कर्मों के कारण, क्योंकि कर्मों का भी गुह्य ज्ञान मनुष्य को नहीं है। पाप को लोग पुण्य समझ रहे हैं। पुण्य से दूर होते जा रहे हैं, कर्मों की गुह्य गति का भी किसी को भी पता नहीं है, ये अज्ञान है, ये अंधकार है। इसके लिए ही प्रार्थना की जाती है कि "हे प्रभु! हमें अंधकार से प्रकाश की ओर ले चलो"। ये नहीं कहते कि शास्त्र पढ़ने से, उपनिषद पढ़ने से, वेद पढ़ने से हम अंधकार से प्रकाश की ओर चले जायेंगे। ये नहीं कहते हे प्रभु! हमें ले चलो। तो प्रभु को आना पड़ता होगा ना!

इसी की यादगार में तो शिवरात्रि मनाई जाती है। बस यही रहस्य शिवरात्रि के सम्बन्ध में हम सभी के सामने स्पष्ट करना चाहते हैं, प्रत्यक्ष करना चाहते हैं। ताकि सभी पुनः अंधकार से प्रकाश की ओर चलें। केवल गाने से तो काम नहीं चलेगा, केवल पढ़ने-लिखने से तो अंधकार दूर नहीं हो सकता, तो भगवान को आना पड़ता है, अंधकार में।

ये रात्रि कोई ये रोज़ होने वाली रात्रि या दिन की बात नहीं है वो तो रोज़ हो रही है। रोज़ सूर्य उदय होता है, प्रकाश फैलता है, दिन निकल आता है, सूरज अस्त होता है, अंधकार छाने लगता है, रात्रि हो जाती है। हम सभी विश्राम में चले जाते हैं। ये क्रम तो सतत् चलता आता है। लेकिन संसार में अज्ञान का अंधकार छा गया है।

आज चारों ओर देख लीजिए, किसी को भी अध्यात्म का, स्वयं का, अपने परमपिता का कोई भी ज्ञान नहीं रहा है। इसलिए भौतिकता की ओर लोग बढ़े जा रहे हैं। भिन्न-भिन्न तरह की विद्याएं, भिन्न-भिन्न तरह की एजुकेशन, भिन्न-भिन्न तरह की डिग्रीयां चारों ओर दी जा रही हैं। एजुकेशन बढ़ती जा रही है लेकिन फिर भी अंधकार भी उतनी ही तेजी से बढ़ता जा रहा है। तो क्या इस भौतिक ज्ञान ने, क्या इस शैक्षणिक ज्ञान ने मनुष्य के अंधकार को दूर नहीं किया! आज तो मनुष्य सोचता है वो पहले की भेंट में ज़्यादा बुद्धिमान है, आप इस बात से सहमत होंगे। आज कोई भी अपने को कम बुद्धिमान नहीं मान रहा है। जिसके पास जितनी ज़्यादा डिग्रीयां हैं, ज़्यादा एजुकेशन है वो अपने को उतना ही ज़्यादा बुद्धिमान मान रहा है, परंतु क्या इन सबसे मनुष्य रियल में ज्ञानवान, बुद्धिवान, बना है? क्या उसको सद्विवेक प्राप्त हुआ है? क्या उसको सद्बुद्धि मिली है? क्या उसके कर्म सुधरे हैं? तो वास्तव में ये रात्रि अज्ञान की रात्रि है।

आगरा-ईदगाह(उ.प्र.)। ब्रह्माकुमारीज़ समाज सेवा विभाग द्वारा आयोजित 'स्वच्छ, स्वस्थ, शिक्षित और स्वर्णिम भारत के निर्माता' समाज सेवियों के सम्मान समारोह के दीप प्रज्वलन कार्यक्रम में उपस्थित रहे केंद्रीय पंचायत राज्य मंत्री प्रो. एसपी सिंह बघेल, लाइंस क्लब के इंटरनेशनल अध्यक्ष जितेंद्र चौहान, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. अश्विना, ब्र.कु. वीरेंद्र,मुख्यालय संयोजक समाज सेवा प्रभाग, प्रेरक वक्ता ब्र.कु. गिरीश तथा अन्य अतिथिगण।

अलीगढ़-रघुवीरपुरी(उ.प्र.)। श्रम एवं सेवायोजन राज्य मंत्री डॉ. ठाकुर रघुराज सिंह को परमात्म संदेश देने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सुनीता।

दिल्ली-डेरावल नगर। विधायक अशोक गोयल,मॉडल टाउन,दिल्ली सरकार से मुलाकात करने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. लता एवं ब्र.कु. प्रीत।

सम्बलपुर-ओडिशा। ब्रह्माकुमारीज़ के 47वें वार्षिकोत्सव पर आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर शुभारम्भ करते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. पार्वती दीदी, प्रख्यात प्रेरणादायक वक्ता व कार्डियोलॉजिस्ट ब्र.कु. डॉ. मोहित गुप्ता, हिरकुद हिंडाल्को के कॉम्प्लेक्स मुख्य सुमित मुखर्जी, वीरसुरेन्द्र साई प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. दीपक कुमार साहू तथा अन्य अतिथिगण।

बवाना-दिल्ली। बवाना पुलिस स्टेशन में आयोजित कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. चन्द्रिका, एसीपी जोगेन्द्र सिंह, एसएचओ रजनीकांत तथा अन्य ब्रह्माकुमारी बहनें।

मुंडामराई-ओडिशा। धराकोटे के तहसीलदार लंबोदर मरांडी से ज्ञान चर्चा करने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. सौदामिनी।

सुन्दरनगर-हि.प्र.। नशा मुक्त भारत अभियान के अंतर्गत कनैड, मेरमसीत और गुरुकोठा के भाई-बहनों को नशा मुक्ति व आध्यात्मिक ज्ञान प्रदर्शनी के माध्यम से नशे के प्रति जागरूक करते हुए ब्र.कु. नवीना।

अयोध्या-उ.प्र.। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान एवं भूतपूर्व सैनिक अंशदायी स्वास्थ्य योजना(ईसीएचएस) के तत्वावधान में ईसीएचएस,अयोध्या कैंट की शाखा में आयोजित 7 दिवसीय राजयोग कार्यक्रम में स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. शशि को पटका पहनाकर सम्मानित करते हुए कैप्टन विजय पाल सिंह। साथ हैं ब्र.कु. शैलजा। कार्यक्रम के दौरान उपस्थित रहे ऑफिसर इंचार्ज ईसीएचएस सेल,स्टेशन हेडक्वार्टर, कर्नल सुनील त्रिपाठी, ऑफिसर इंचार्ज,ईसीएचएस पॉलिक्लिनिक,पूर्व लेफ्टिनेंट कर्नल सोपी सिंह, एमडी ईसीएचएस पॉलिक्लिनिक,डॉ. आदर्श सिंह, डॉ. मानसी मिश्रा, सूबेदार मेजर बीडी तिवारी तथा अन्य।

## सूचना

आप सभी पाठकों से मिलकर, बात करके बहुत अच्छा लगता है अपने लेखों के माध्यम से, अपनी पत्रिका के माध्यम से। लेकिन समय प्रति समय बदलाव ज़रूरी है और उस बदलाव को स्वीकार करना भी ज़रूरी है। तो एक छोटा-सा बदलाव हम पाठकों के सामने लेकर आ रहे हैं। जो हमारी, आपकी अपनी पत्रिका ओमशान्ति मीडिया का जो पाक्षिक आगमन होता था आप सबके पास, अब उसको मासिक किया जा रहा है। कई सारे पाठकों का ये मत था कि महीने में दो बार थोड़ा ज़्यादा हो जाता है। तो उसको एक में समेटकर मासिक करने का निर्णय लिया गया। और इसमें वो सारी चीज़ें उपलब्ध हैं जो पहले भी थीं। और कुछ उसमें अनुभव, कुछ स्वास्थ्य सम्बन्धी बातें और कुछ नये आयाम जीवन के जोड़कर इस पत्रिका को और अच्छा बनाया गया है।

तो आप सभी से हमें आपके अपने कमेंट तो चाहिए साथ ही इसमें और-और क्या हम नया परिवर्तन करें जो सभी को अच्छा लगे, वो सुझाव भी चाहिए। लेकिन आप सबका प्यार, आप सबकी इसके प्रति इतनी भावना देखकर आज भी हमको इसको बनाने का मन करता है। तो इस नये बदलाव सोलह पेज के साथ इस नयी पत्रिका को आप सभी स्वीकार करें। अब से अगस्त मास से ये पत्रिका मासिक होने जा रही है। इन्हीं सारी बातों के साथ, इन्हीं सारी शुभकामनाओं के साथ इस नये बदलाव का स्वागत करें।